वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यास 'झाँसी की रानी' में स्त्री चेतना

शीतल कुमारी

शोधार्थी, हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश

स्त्री के प्रति पितृसत्तात्मक समाज का रवैया निश्चित मानदंडों और आदर्शों से संचालित होता रहा है जिसमें स्त्री की भूमिका पहले से तय कर दी जाती है। धर्म, वर्ण, जाति और वर्ग के स्तर पर स्त्री को दोयम दर्जे का प्राणी समझा जाता है। स्त्री को उस आदर्श आचरण संहिता के अनुसार साथ जीना होता है जिसका निर्धारण सदियों से पुरुषों ने अपने पास रखा है। ऐसे में वृन्दावन लाल वर्मा का ऐतिहासिक उपन्यास 'झाँसी की रानी' आज भी उतना ही प्रासंगिक जान पड़ता है जितना इतिहास में था। रानी लक्ष्मीबाई ने जिस स्त्री चेतना को प्रस्तुत किया उसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि इससे स्त्रियों में उस असीमित शक्ति का प्रवाह होता है, जिससे स्त्रियाँ अपने जीवन से जुड़े हर फैसले को स्वयं ले सकती हैं।

बीज शब्द : नारी विमर्श, अस्मिता, स्वराज्य, समानता, पितृसत्तात्मक, स्वाभिमान।

प्रस्तावना

आज दलित विमर्श, दलित - स्त्री विमर्श और स्त्री विमर्श के साथ-साथ आदिवासी विमर्श समकालीनता के केंद्र में है। हमारे यहाँ मानवता का सवाल दलित मुक्ति, वर्ण व्यवस्था और नारी अस्मिता से जुड़ा हुआ है। ऐसे में लक्ष्मीबाई का पूरा व्यक्तित्व, उनका संघर्ष, विद्रोह और आत्मसमर्पण का संबंध किसी ना किसी तरह स्त्री अस्मिता की पहचान और नारी मुक्ति की भावना से है। लक्ष्मीबाई का 13 वर्ष की उम्र में अपने पिता से कहना कि “जब मैं सवाल करती हूँ तो आप इसी प्रकार मेरा मुँह बंद कराने लगते हैं”¹। ये बात भले ही आज से लगभग 170 वर्ष पूर्व की है, पर आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। स्त्री के प्रति पितृसत्तात्मक समाज का रवैया निश्चित मानदंडों और आदर्शों से संचालित होता रहा है जिसमें स्त्री की भूमिका पहले से तय कर दी जाती है। धर्म, वर्ण, जाति और वर्ग के स्तर पर स्त्री को दोयम दर्जे का प्राणी समझा

जाता है। स्त्री को उस आदर्श आचरण संहिता के अनुसार जीना होता है जिसके निर्धारण सदियों से पुरुषों ने अपने पास रखा है।

ऐसे में वृन्दावन लाल वर्मा का ऐतिहासिक उपन्यास 'झाँसी की रानी' आज भी उतना ही प्रासंगिक जान पड़ता है जितना इतिहास में था। सामान्यतः 'झाँसी की रानी' लक्ष्मीबाई का नाम सामने आते ही, वर्ष 1857 की क्रांति, तलवार की चमक और युद्ध की प्रचंड ध्वनि स्वतः ही कानों में गुंजने लगती है। अगर अतीत के कालखंड में थोड़ा पीछे जाके देखा जाये तो एक बात स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, रानी लक्ष्मीबाई को सिर्फ युद्ध में वीरता दिखाने या उनके विद्रोही स्वभाव के लिये याद नहीं किया जा सकता बल्कि उनका पूरा जीवन स्त्री चेतना से लैस था। वह स्त्रियों के लिये मार्ग प्रशस्त करती है। उनका जीवन साक्षात् स्त्री सशक्तीकरण का उदाहरण पेश करता है। जिसे वर्तमान में स्त्री विमर्श और स्त्री चेतना कहा जा रहा है, उसकी सशक्त अभिव्यक्ति, रानी लक्ष्मीबाई के व्यक्तित्व और कृतित्व में देखने को मिलती

¹वृन्दावन लाल वर्मा (१९५६) झाँसी की रानी - लक्ष्मीबाई (षष्ठम संस्करण), (झाँसी. १८, मयूर प्रकाशन :

है। मधुरेश, वृन्दावन लाल वर्मा के स्त्री पात्रों के लिये लिखते हैं –

“स्त्री की गरिमा का बखान और निर्जीव भोग सामग्री से भिन्न उसके अस्तित्व का आग्रह उनके उपन्यासों को एक भिन्न धरातल देता है। दुर्गावती, लक्ष्मीबाई और अहिल्याबाई आदि पात्र बाकायदा साम्राज्यवाद विरोधी अभियान का संचालन करते हुये अपने आप में तेजस्वी पात्र हैं”¹² वास्तव में लक्ष्मीबाई का जीवन और व्यक्तित्व विलक्षण है। मधुरेश ने वृन्दावन लाल वर्मा के स्त्री पात्रों के लिये जो कहा है, वह बहुत सटीक है। लक्ष्मीबाई का उपन्यास में, बाकी स्त्रियों से यह कहना कि-“पुरुषों को पुरुषार्थ सिखलाने के लिये स्त्रियों को मलखब, कुश्ती इत्यादि सीखना ही चाहिये। खूब तेज दौड़ना भी। नाचने- गाने से भी स्त्रियों का स्वास्थ्य सुधरता है, परन्तु अपने को मोहक बना लेना ही तो स्त्री का समग्र कर्तव्य नहीं है”¹³ ये कथन, इस बात को प्रमाणित करता है कि रानी लक्ष्मीबाई का व्यक्तित्व कितना तेजस्वी था। वास्तव में ‘मणिकर्णिका से रानी लक्ष्मीबाई तक का सम्पूर्ण जीवन, स्त्री चेतना को समर्पित था।

बाल्य-काल

19 नवंबर, 1828 को बनारस के एक मराठी ब्राह्मण परिवार में, भविष्य में सूर्य के समान तेजवान चमकने वाली शक्ति का उदय हुआ और इस शक्ति का नाम मणिकर्णिका रखा गया। घर परिवार में मणिकर्णिका को मनु कहकर बुलाया जाता था। 4 वर्ष की उम्र में ही मां के गुजरने पर पिता मोरोपंत तांबे के द्वारा इनका लालन पालन किया गया। रानी लक्ष्मीबाई के पिता बिठूर ज़िले के पेशवा के यहां काम करते थे, पेशवा ने रानी लक्ष्मीबाई को अपनी बेटी की तरह पाला। मनु की चपलता, चंचलता और प्रश्न पूछने की कला से प्रभावित होकर पेशवा मनु को प्यार से छबीली कहकर पुकारते थे। बिठूर के राज परिवार में पली बड़ी मनुबाई को सदा ही पेशवा का अधिक लाड़ प्यार मिला, जिसके कारण उन्हें अन्य बालिकाओं के अपेक्षा अधिक खुला वातावरण मिला।

¹²मधुरेश (२००८) हिंदी उपन्यास का विकास (चतुर्थ संस्करण), सुमित प्रकाशन, १६३,

¹³वृन्दावन लाल वर्मा (१९५६) झाँसी की रानी – लक्ष्मीबाई (षष्ठम संस्करण), (झाँसी, ६५, मयूर प्रकाशन :

चार वर्ष की मनु बड़ी ही सरलता से घुड़सवारी और तलवार भांजने जैसी क्रियाओं में रुचि दिखाने लगीं।

‘झाँसी की रानी’ उपन्यास में जिस तरह से इस मनुबाई से परिचय कराया गया वो बचपन से ही उनकी दृढ़ इच्छा शक्ति को प्रकट करता है। वृन्दावन लाल वर्मा ‘झाँसी की रानी’ उपन्यास के प्रथम भाग ‘उदय’ में लिखते हैं- “बालिका ने अपने घोड़े को एड लगायी। बोली, देखूँ कैसे आगे निकलते हैं। और वह आगे हो गई”¹⁴

इस घटना में थोड़ी देर बाद ही दुर्घटना हो जाती है और मनुबाई के साथ के बालक को काफी गंभीर चोट आती है। जिस परिस्थिति में ये सन्दर्भ लिया है, उस समय मनुबाई की उम्र 13 वर्ष से भी कम की थी फिर भी उम्र से अधिक परिपक्वता दिखाते हुये उन्होंने अपने से अधिक उम्र के दूसरे बालक को न केवल शांत कराया बल्कि अपने घोड़े से घर भी लेकर आयी। प्रस्तुत घटनाक्रम न केवल मनुबाई के स्वभाव में सौम्यता, विकट परिस्थिति में भी सहजता से निर्णय लेने को प्रस्तुत करता है बल्कि एक स्त्री के हृदय में समाहित असीमित शक्ति पुंज को भी व्यक्त करता है।

मनु बचपन से ही स्वाभिमानी व विद्रोही स्वभाव की थीं। उनके कई ऐसे किस्से हैं जो यह बतलाते हैं कि वो बाल्यावस्था से ही स्त्रियों के विकास के लिए अपनी आवाज बुलंद करती रही हैं। एक बार अपने पिता से बात करते हुए बार-बार प्रश्नों के दोहराव के कारण उनके पिता डांट कर चुप करा देते हैं। वास्तव में यहाँ ये दिखाई दे रहा है कि स्त्रियों को उस आदर्श आचरण संहिता के अनुसार जीना है जिसके निर्धारण का अधिकार सदियों से पुरुष ने अपने पास सुरक्षित रखा है। वास्तव में, स्त्री की लड़ाई पुरुष से नहीं बल्कि उस पितृसत्तात्मक व्यवस्था से है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक स्त्रियों को सिर्फ शांत रहने के लिये ही दबाव डालता है।

रानी लक्ष्मीबाई की समानता की दृष्टि

आज हम जिस समानता की बात कर रहे हैं, वह लक्ष्मीबाई की दृष्टि में आज से लगभग १७० वर्ष ही दिखाई दे जाता है। लक्ष्मीबाई ने कभी भी महिलाओं में भेदभाव नहीं किया और सबको समान एवं सम्मान के दृष्टि से देखा। ऐसा ही एक किस्सा मनुबाई के विवाह का

¹⁴वृन्दावन लाल वर्मा (१९५६) झाँसी की रानी – लक्ष्मीबाई (षष्ठम संस्करण), (झाँसी मयूर : प्रकाशन, १७,

है, राजा गंगाधर राव नेवलकर से विवाह के पश्चात, जब वो झांसी की महारानी बनीं तब एक दासी ने मिलकर अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं आपकी दासी सुंदर हूँ। इस पर मनु ने कहा- “मेरी कोई दासी न हो सकेगी। मेरी सहेली होकर रहोगी”।⁵ यहाँ स्पष्ट रूप से ये देखा जा सकता है कि मनुबाई इस बात से भलीभांति परिचित थी कि अगर समाज में स्त्रियों को सशक्त करना है तो पहले प्रत्येक स्त्री को स्त्रियों के मध्य का भेद मिटाना होगा। अगर एक स्त्री ही दूसरी स्त्री के लिये ऐसा नहीं करेगी तो स्त्री चेतना और स्त्री उत्थान की बातें सिर्फ सिद्धांतों तक ही सीमित रह जायेगी। जब मनु ने ये कहा कि मेरी कोई दासी नहीं हो सकती है तो इसका तात्पर्य स्पष्ट था कि किसी भी मनुष्य को किसी का भी दास होना, किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं करना चाहिए। दासता की बेड़ियों में बंधा मनुष्य न केवल शारीरिक रूप से लाचार होता है बल्कि मानसिक रूप से भी बंधन में बंध जाता है। स्त्री चेतना को जाग्रत करके स्त्री उत्थान तक का ऐसा सुन्दर उदाहरण ऐतिहासिक रूप से और कही नहीं मिलता है।

मनु को हमेशा से ही यह पता था कि अगर अंग्रेजी हुकूमत के साथ - साथ पितृसत्तात्मक समाज के निश्चित मानदंडों भी का सामना करना है तो स्त्री को पहले अपने अंदर के डर और हिचक की बेड़ियों को तोड़ कर फेंकना होगा। उन्होंने कभी महिलाओं को पुरुष से कम नहीं समझा। उनके विवाह के समय का ही एक किस्सा है, कुछ युवतियां जो कि उम्र में मनु से काफी बड़ी थी बैठ कर संगीत गायन कर रही थी तो मनु ने बातों - बातों में मनु ने उन युवतियों को आत्मरक्षण एवं स्वतंत्रता का महत्व समझाया। फूलों को देखकर लक्ष्मीबाई कहती है- “मुझको भी ये पसन्द है परन्तु सोने चाँदी का जीन ज्यादा अच्छा लगता है”।⁶ लेखक ने अपने उपन्यास में स्त्री की वीरता, पराक्रम के साथ - साथ तार्किकता का अमर उदाहरण प्रस्तुत किया है। लक्ष्मीबाई के साथ - साथ मोतीबाई, जूही, सुन्दर, काशीबाई, झलकारीबाई आदि नारी पात्रों के माध्यम से स्त्री-चेतना की समस्त अभिव्यक्ति उपन्यास में हुई है।

⁵ वृंदावन लाल वर्मा, (१९५६) झाँसी की रानी - लक्ष्मीबाई (षष्ठम संस्करण), (झाँसी. ६३, मयूर प्रकाशन :

वही. ७१,

रानी लक्ष्मीबाई के महिला सशक्तिकरण के विचार

लक्ष्मीबाई का मानना था कि महिलाओं का सशक्तीकरण एक राष्ट्र के सशक्तीकरण के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि किसी भी राष्ट्र के लिए उसका स्वतंत्र होना। मनुबाई के लिए, परंपराओं एवं संस्कृति का भी उतना ही महत्व था जितना कि सशक्तीकरण का, वो मानती थीं कि किसी राष्ट्र के निर्माण में दोनों का ही बराबर का योगदान होता है। मनुबाई स्त्री सशक्तीकरण के साथ - साथ मातृशक्ति का भी साक्षात् उदाहरण हैं। झांसी की सभी स्त्रियों को, लक्ष्मी बाई ने न केवल अपनी सहेली बनाया बल्कि उन्हें तलवारबाजी और घुड़सवारी का प्रशिक्षण भी दिया। इस प्रकार लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ अपनी महिला सेना बनाई जो न केवल साहसी और दृढ़निश्चयी थी बल्कि समर में अपना योगदान देने के लिए तैयार भी थीं। इनमें जूही, सुंदर, मुंदर, झलकारी बाई, काशीबाई आदि इस प्रमुख थीं।

निश्चित ही स्त्रियों में इस चेतना को जगाना लक्ष्मीबाई के लिए सरल नहीं रहा होगा। इसकी शुरुआत भी हल्दी कुमकुम के उत्सव से हुई। लक्ष्मीबाई का मानना था जिस प्रकार शारीरिक स्वतंत्रता से पहले मानसिक स्वतंत्रता आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार शारीरिक चेतना से पहले मानसिक चेतना का महत्व है। लक्ष्मीबाई ने उन सभी स्त्रियों को न केवल राष्ट्र प्रेम की अनुभूति कराई बल्कि राष्ट्र के प्रति उनके दायित्वों एवम् जिम्मेदारियों का भी एहसास कराया। राष्ट्र निर्माण में अपना अद्भुत योगदान देने वाली लक्ष्मीबाई साहसी के साथ - साथ दूरदर्शी भी थीं। लार्ड डलहौजी ने गोद नीति के अंतर्गत लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र दामोदर राव को झाँसी का बारिश मानने से अस्वीकृत कर दिया और झाँसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा की। बचपन से स्त्री स्वाभिमान के साथ जीने वाली रानी लक्ष्मी बाई ने कहा मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी और मैं स्वराज्य के लिये लड़ूंगी। निश्चित रूप से, न केवल यहाँ से भारत की प्रथम स्वाधीनता क्रांति का बीज प्रस्फुटित हुआ बल्कि पूरे समाज के लिये स्त्री चेतना की लौ भी प्रज्वलित हुई।

रानी लक्ष्मीबाई जिस स्वराज्य की बात करती है उसका तात्पर्य था हर कीमत पर अपने आत्मसम्मान और स्वाभिमान की रक्षा करना चाहिये और अगर आपके पास

आत्मसमर्पण या युद्ध जैसे दो विकल्प हो अर्थात् जीवन या स्वाभिमान में से चुनना तो किसी भी मनुष्य को स्वाभिमान को चुनना चाहिये। स्वराज्य का तात्पर्य होता है - 'स्वशासन' या "अपना राज्य"। सत्यपाल चुघ लिखते हैं- "लेखक को अभीष्ट था कि झांसी की रानी को स्वराज्य के लिए लड़ने वाली दया, मानवता, वीरता, त्याग, उत्साह, स्फूर्ति एवं बलिदान के सजग- प्रमाण के रूप में चित्रित करें- और इसमें वह सफल भी रहा है- इतना ही नहीं; उसे यह भी सिद्ध करना था कि रानी को स्वराज्य की स्पष्ट कल्पना थी और वह स्वाधीनता संग्राम की नेत्री तथा संचालिका थी"।⁷

रानी लक्ष्मीबाई के स्वराज्य से पूरे समाज को विशेषकर स्त्रियों को शिक्षा लेनी चाहिये और अपने हक के लिये आवाज उठाना चाहिये, किसी भी स्थिति में किसी भी प्रकार का अन्याय नहीं सहना चाहिये। मात्र 25 वर्ष की आयु में झांसी की रक्षा के लिए ब्रिटिश साम्राज्य से विद्रोह, ये सिखाता है कि अपने अधिकारों की रक्षा के लिए किसी भी हद तक जाया जा सकता है। रानी लक्ष्मीबाई के जीवन से जो सबसे महत्वपूर्ण और व्यवहारिक शिक्षा हमें मिलती है वो यह है कि, शस्त्र और शास्त्र विद्या, तार्किक बुद्धि, युद्ध कौशल और ज्ञान किसी औपचारिक शिक्षा की मोहताज नहीं है। रानी लक्ष्मीबाई ने किसी पाठशाला में औपचारिक शिक्षा ग्रहण नहीं की थी लेकिन उनकी युद्ध क्षमता ने ब्रिटिश साम्राज्य को भी अचंभे में डाल दिया था। रानी झांसी की निर्भीकता और बहादुरी को देखकर ही अंग्रेज अधिकारी जनरल ह्यूरोज ने चार जून, 1858 को कहा था कि "नोस्टूअर्सइफ वन परसेंट ऑफ इंडियन वुमेनबिकम सो मैडऐज दिस गर्लइज, वी विलहैवटूलीवआलदैट वी हैव इन दिस कंट्री (अगर भारत की एक फीसदी महिलाएं इस लड़की की तरह आजादी की दीवानी हो गईं तो हम सबको यह देश छोड़कर भागना पड़ेगा)"⁸।

रानी लक्ष्मीबाई ने जिस स्त्री चेतना को प्रस्तुत किया उसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि इससे स्त्रियों

में उस असीमित शक्ति का प्रवाह होता है, जिससे स्त्रियाँ अपने जीवन से जुड़े हर फैसले को स्वयं ले सकती हैं और परिवार और समाज में एक अच्छे स्थान पर, बिना किसी भेदभाव के रह सकती हैं। वास्तव में समाज में स्त्रियों को उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिए उन्हें सक्षम बनाना ही स्त्री उत्थान है। बिंदु अग्रवाल लिखती हैं कि- "रानी राज्य के लिए नहीं स्वराज के लिए लड़ती है इसलिए लेखक ने रानी के संघर्ष को व्यक्तिगत नहीं सामूहिक रूप दिया है और रानी को ही नहीं जनसाधारण की भावनाओं और प्रतिक्रियाओं का वर्णन उतने ही विस्तार मनोयोग से किया है"।⁹

वास्तव में लेखक ने जिस सामूहिकता से सभी स्त्री पात्रों को जो जगह दिया है, वह उल्लेखनीय है। उपन्यास के एक प्रसंग में जहां रानी को उसके प्रेम के बारे में पता चलता है, रानी और सुंदर के बीच वार्तालाप होता है:

“रानी लक्ष्मीबाई ने सुंदर से कहा- तू विवाह कर ले”।

‘सुंदर : जब स्वराज्य स्थापित कर चुकेंगे तब’।

‘लक्ष्मीबाई : स्वराज तो देर- सवेर स्थापित कर चुकेंगे ही। तू विवाह के लिए क्यों रुके?’

‘सुन्दर : वह जीवन का मुख्य कार्य नहीं है’।

‘लक्ष्मीबाई- यह तेरी इच्छा पर निर्भर है परंतु मेरी अनुमति है”।¹⁰

सुंदर के लिए विवाह करना उतना ज़रूरी नहीं है जितना स्वराज के लिए मरना है। वह लक्ष्मी बाई की तरह बनना चाहती है और वैसे ही अपनी वीरता का परिचय देना चाहती है। उसे मृत्यु से भी डर नहीं लगता है। वह रघुनाथ सिंह से स्वर्ग में मिलने की बात करती है।

लेखक ने लक्ष्मी बाई के चरित्र की उच्चता का जो वर्णन पेश किया है वह वास्तव में सराहनीय है। लेखक ने उनके चरित्र चित्रण में स्वदेश प्रेम, वीरता, त्याग, संगठन क्षमता, और झांसी की जनता के प्रति उनके प्रेम का चित्रण प्रस्तुत किया है। रानी के चरित्र की ये विशेषता ही है कि उनके आसपास वीरता से परिपूर्ण, स्वभाव से विद्रोही और स्त्री चेतना से लैस नारियों का एक समूह बन

⁷डॉ. १०३ पृष्ठ, एतिहासिक उपन्यास, सतपाल चुघ .

⁸डेविड, शाऊल (२००३) द इंडियन म्यूटिनी : 1857, लंदन: पेंगुइन, ३६७.

⁹बिंदु अग्रवाल (१९७८) हिंदी उपन्यास में नारी चित्रण, राधाकृष्ण प्रकाशन. ३७६,

¹⁰वृंदावन लाल वर्मा (१९५६), झांसी की रानी – लक्ष्मीबाई (षष्ठम संस्करण), (झांसी. ४५६, मयूर प्रकाशन :

जाता है। जिस केंद्र में लक्ष्मीबाई है, यह स्त्रियां सदा उनके आसपास रहती हैं और कदम-कदम पर रानी की ताकत बनती है और उनके लिए मर मिटने को भी तैयार है।

आज भी जहां पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को स्त्री का दुश्मन स्थापित करने की कोशिश की जाती है, लक्ष्मीबाई ने आज से लगभग 170 वर्ष पूर्व पितृसत्तात्मक समाज की इस मानसिकता को चुनौती दिया है। आज का नारी आंदोलन भले ही अपने दूसरे और तीसरे दौर में पहुंच चुका हो परन्तु लक्ष्मीबाई द्वारा स्त्री चेतना को जागृत कर, स्त्रियों के मध्य जो एकता स्थापित की थी, वो उस समय के समाज में किसी आंदोलन से कम नहीं है।

निष्कर्ष

रानी लक्ष्मीबाई का पूरा जीवन आज भी स्त्री के चेतना अंदर जाग्रत करने वाला है, 21 वीं सदी में भी रानी लक्ष्मी स्त्री उत्थान का एक आदर्श प्रतिमान है। बचपन से ही मनु को जिस प्रकार से स्वयं पर एक अदम्य विश्वास था, उस आत्मविश्वास ने उनकी तलवार और स्वाभिमान को कभी झुकने नहीं दिया। लक्ष्मी बाई की शौर्य एवम् साहस की कहानियां केवल पठनीय ही नहीं हैं बल्कि नारी सशक्तीकरण का एक अमिट प्रतीक भी हैं। लक्ष्मीबाई कहती थीं, स्त्रियों को केवल आत्मरक्षण के लिए ही नहीं बल्कि पुरुषों को पुरुषार्थ सिखाने के लिए भी कुश्ती आदि सीखना ही चाहिए। उनका मानना स्त्री को सिर्फ भोग विलास की वस्तु बन कर सीमित नहीं रहना चाहिये। लक्ष्मी बाई का मानना था कि राष्ट्र की जनता की राष्ट्र की असल शक्ति है। लक्ष्मीबाई न केवल स्त्री सशक्तीकरण के प्रति सजग थीं बल्कि उनके हृदय में स्त्रियों के कला और कौशल के लिए बराबर का सम्मान था। वास्तव में लक्ष्मीबाई कर्तव्य निष्ठा एवं शौर्य की साक्षात् मूर्त थीं। डॉ. रामचन्द्र तिवारी, वृंदावन लाल वर्मा के उपन्यास 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' के बारे में लिखते हैं-

“इस उपन्यास का चित्रपट देशव्यापी और विस्तृत है। प्रथम बार वर्माजी ने बुन्देलखण्ड की परिचित भूमि से बाहर निकलकर देशव्यापी ऐतिहासिक वातावरण को सजीव किया है। ‘रानी का शौर्य परिस्थितिजन्य था’, वर्माजी ने अंग्रेजों की इस भ्रान्त धारणा का सफलतापूर्वक निराकरण किया है। उन्होंने अनेक ऐतिहासिक साक्ष्यों का

उपयोग करते हुए स्पष्ट कर दिया है कि 'रानी स्वराज्य के लड़ी थी, उसके विद्रोह के पीछे एक निश्चित देशव्यापी योजना थी। रानी के व्यक्तित्व में भारत को अन्तरात्मा का जागरण सजग हो उठा था’¹¹।

अंततः हम कह सकते हैं कि वृंदावन लाल वर्मा ने अपने उपन्यास 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई' में प्रथम स्वाधीनता संग्राम के सत्य को उद्घाटित करने के साथ-साथ स्त्री पात्रों के साथ न्याय भी किया है। टूटी इतिहास की कड़ियों को जोड़ते स्त्री चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति इस उपन्यास में अतुलनीय रूप से हुई है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. वर्मा वृंदावन लाल ,, झाँसी की रानी- लक्ष्मीबाई (षष्ठम संस्करण),(मयूर प्रकाशन, झाँसी, १९५६
2. मधुरेश, हिंदी उपन्यास का विकास (चतुर्थ संस्करण),(सुमित प्रकाशन ,इलाहाबाद , २००८
3. चुध ,ऐतिहासिक उपन्यास ,सतपाल .डॉ , दिल्ली ,नेशनल पब्लिशिंग हाउस, १९७४
4. शाऊल, डेविड, द इंडियन म्यूटिनी: १८५७, पेंगुइन, लंदन, २००७
5. अग्रवाल, बिंदु, हिंदी उपन्यास में नारी चित्रण, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ,१९७८
6. तिवारी झाँसी की रानी ,रामचन्द्र , लक्ष्मीबाई विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी, २००९

¹¹रामचन्द्र तिवारी पृष्ठ ,झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई , 591